

भारत-ईरान संबंध: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

यह एडिटरियल 17/06/2022 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित "Iran foreign minister's visit reaffirms resolve of two countries to strengthen ties" लेख पर आधारित है। इसमें चर्चा की गई है कि किस प्रकार भारत-ईरान संबंध की चुनौतियों को दूर कर इसकी अपार संभावनाओं का उपयोग किया जा सकता है।

संदर्भ

हाल ही में ईरान की नई सरकार की 'एशिया-उन्मुख' विदेश नीतिका पालन करते हुए ईरानी विदेश मंत्री ने भारत का दौरा किया। वर्ष 2021 में नई सरकार के आने के बाद से भारत के साथ संबंधों को पुनर्स्थापित करने की दशा में यह ईरान की ओर से पहला मंत्री-स्तरीय दौरा था।

दोनों पक्षों के समक्ष वदियमान चुनौतियाँ और इनके समाधान पर वचार

ऐतहासकि पृष्ठभूमि

- भारत एवं ईरान फारसी साम्राज्य और भारतीय साम्राज्यों के युग से ही घनषिठ सभ्यतागत संबंध रखते हैं।
- भारत के पड़ोस में ईरान एक महत्त्वपूर्ण देश है। वस्तुतः वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता तथा वभाजन से पहले तक दोनों देश सीमा भी साझा करते थे।
- प्रधानमंत्री अटल बहारी वाजपेयी की ईरान यात्रा के दौरान हस्ताक्षरति 'तेहरान घोषणापत्र' ने "समान, बहुलवादी और सहकारी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था" के लिये दोनों देशों के साझा दृष्टिकोण की पुष्टि की थी।
- इसने तत्कालीन ईरानी राष्ट्रपति मोहम्मद खतामी के "सभ्यताओं के बीच संवाद" के दृष्टिकोण को सहषिणुता, बहुलवाद और वविधिता के सम्मान के सिद्धांतों पर आधारति अंतरराष्ट्रीय संबंधों के परतमिन के रूप में चहिनति किया था।

रणनीतकि महत्त्व क्या है?

- **भारत के लिये:**
 - अवस्थति: ईरान फारस की खाड़ी और कैस्पियन सागर के बीच एक रणनीतकि और महत्त्वपूर्ण भौगोलकि स्थति रखता है।
 - संपर्क: ईरान भारत के लिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत को (पाकस्तान के माध्यम से स्थल मार्ग का उपयोग करने की अनुमतकिे अभाव में) अफगानस्तान और मध्य एशियाई गणराज्यों तक संपर्क हेतु एक वैकल्पकिे मार्ग प्रदान करता है।
 - प्राकृतकिे संसाधन: इसके पास वशिव में कच्चे तेल और प्राकृतकिे गैस के सबसे बड़े भंडारों में से एक मौजूद है।
- **ईरान के लिये:**
 - **भारत की रणनीतकिे स्थति:**
 - भारत वशिव में दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है जो एक बड़ी अर्थव्यवस्था है और वशाल जनसांख्यिकीय लाभांश रखता है।
 - यह ईरान को अपना तेल एक बड़े बाजार (अर्थात् भारत) में बेच सकने में मदद करता है, जो कि इसकी भौगोलकिे अवस्थति के निकट है और अंततः इसकी लागत को कम करता है।
 - **व्यापार संबंधों में सुधार:** यह ईरान को वशिव की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में नविश करने और व्यापार संबंधों के संवर्द्धन का अवसर देता है। यह ईरान की लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को सहारा देता है।

भारत-ईरान संबंधों में वदियमान समस्याएँ

- ईरान परमाणु समझौते के नरिसन और फरि उस पर अमेरकिी परतबिंधों के परदृश्य में मई, 2019 के बाद से ईरानी तेल का आयात बंद हो गया, जिससे भारत की ऊर्जा सुरक्षा प्रभावति हो रही है।
- भारत इजरायल के साथ घनषिठ संबंध रखता है जबकि ईरान के चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध हैं (जहाँ दोनों देशों के 25-वर्षीय रणनीतकिे साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर कर रखे हैं)।

- ईरान समर्थति यमन के हूली (Houthi) वदिरोही सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (दोनों भारत के नकिट सहयोगी देश) पर ड्रोन हमलों में संलग्न हैं।
- भारत सरकार द्वारा कश्मीर को वशिष दर्जा देने वाले भारतीय संवधान के [अनुच्छेद 370](#) को नरिस्त कयि जाने पर ईरान की ओर से कड़े बयान दयि गए।

संबंधों की पुनर्बहाली के लयि आशावादी स्थतियिँ कौन-सी हैं?

■ अभसिरण के कषेत्ः

○ अफगानसितानः

- अगस्त 2021 में काबुल पर नयितरण करने के बाद से तालबिन सरकार काफी हद तक अलग-थलग पड़ी हुई है। ईरान उन कुछ देशों में से एक था जनिहोंने तालबिन के सत्तारूढ़ होने के बाद भी काबुल में अपने दूतावास बंद नहीं कयि और तालबिन के साथ संचार के अपने चैनलों को खुला बनाए रखा।
- अब भारत भी पुनः काबुल में अपना दूतावास खोलने का इच्छुक है और उसने हाल ही में तालबिन के साथ बातचीत भी शुरू की है।
- भारत और ईरान भवषिय में अफगानसितान के साथ भागीदारी की साझी एवं प्रभावी नीतिके नरिमाण की दशिा में आगे बढ़ सकते हैं।

○ पश्चमि एशयिाः

- पश्चमि एशयिाई भूभाग में एक पुनरसंतुलन आकार ले रहा है जो भारत-ईरान संबंधों को सुदृढ़ करने हेतु व्यापक संभावनाएँ प्रदान कर रहा है।
- लंबे समय से, खाड़ी देशों (वशिष रूप से सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात) के साथ भारत के बढ़ते संबंधों को ईरान के साथ उन देशों की प्रतदिवंदवतिा के परदृश्य में 'जीरो-सम गेम' के रूप में देखा जाता रहा है।
- यूएई और कतर ने हाल ही में ईरान के साथ एक सार्थक संवाद की शुरुआत की है। इस वर्ष ईरान के राष्ट्रपतिने कतर और ओमान की यात्रा भी की है जो संबंध सुधार की दशिा में महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है।
- सीरयिा और इराक भी धीरे-धीरे अपनी स्थतिसुदृढ़ कर रहे हैं और ईरान के प्रतसिकारात्मक रुख का संकेत दे रहे हैं।
- इजरायल के साथ अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर कषेत्तीय देशों द्वारा अनविरय रूप से शत्रु के बजाय एक संभावति भागीदार के रूप में इजरायल की स्वीकृतिके प्रतआशा का संचार करते हैं।
- ये सभी घटनाक्रम भारत के अनुकूल हैं क्योंकि उसके खाड़ी देशों, ईरान और इजरायल सभी के साथ घनषिठ और अच्छे संबंध हैं।
- इससे भारत को इस कषेत्ः में अन्य मतितरों/भागीदारों को खोने के भय के बनिा ईरान के साथ अपने सहयोग को व्यापक रूप से आगे बढ़ाने का शानदार अवसर प्राप्त हो रहा है।
- वस्तुतः भवषिय में भारत इस भूभाग में एक आदर्श वार्ताकार के रूप में उभर सकने की संभावना रखता है, क्योंकि इसे सभी हतिधारकों का भरोसा हासलि है।

भारत-ईरान संबंधों के पुनरगतन के लाभ

- **द्वपिकषीय संभावनाओं के द्वार खोलनाः** सुदृढ़ द्वपिकषीय संबंध भारत और ईरान के बीच सहयोग की क्षमता का पूरी तरह से दोहन कर सकने के द्वार खोल सकते हैं, जो अंततः कषेत्तीय और वैश्वकि कल्याण की ओर ले जाएगा।
- **कच्चे तेल की ससूती आपूर्तिः** भारत ईरान से तेल आयात को फरि से शुरू करने पर वचिर कर सकता है। भारत द्वारा नीतपिरविरतन और ईरानी तेल आयात की पुनरबहाली संभावति रूप से अन्य देशों को भी इस राह पर आगे बढ़ने और बाज़ार में अतरिकित तेल की उपलब्धता के लयि (जो अंततः कच्चे तेल मूल्यों को नीचे ला सकता है) प्रोत्साहति कर सकती है।
- **यूरेशयिा के साथ संपर्क नरिमाणः** [इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर \(INSTC\)](#) इस सदी की शुरुआत में लॉन्च की गई एक महत्त्वाकांक्षी परयिोजना है, जिसका उद्देश्य भारत, ईरान, अफगानसितान, रूस, मध्य एशयिा और यूरोप को मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट के माध्यम से जोड़ना है ताकि मालों के पारगमन समय में पर्याप्त कमी लाई जा सके।
 - यद्यपि इसका कुछ भाग कार्यानवति कयिा गया है, लेकिन ईरान पर प्रतबिंधों के कारण इसकी पूरी क्षमता साकार नहीं हो सकी है। भारत और ईरान परणामी व्यापार के लाभों को प्राप्त करने हेतु INSTC को आवश्यक प्रोत्साहन देने में एक प्रमुख भूमकिा नभिा सकते हैं।
- **ऊर्जा सुरकषाः** [ईरान-ओमान-भारत गैस पाइपलाइन \(IOI\)](#) भी एक महत्त्वाकांक्षी परयिोजना है जो लंबे समय से अटकी हुई है। आशाजनक है कि नये ईरानी राष्ट्रपति इब्राहिम रायसी की हालयिा यात्रा के दौरान ईरान और ओमान ने अपनी समुद्री सीमाओं के साथ दो गैस पाइपलाइन और एक तेल कषेत्ः विकसति करने के समझौते पर हस्ताक्षर कयिे हैं।
 - यद्यिह परयिोजना आगे बढ़ती है तो भवषिय में पाइपलाइन को भारत तक भी वसितारति कयिा जा सकता है। यह वफिल रहे ईरान-पाकसितान-भारत (IPI) पाइपलाइन का एक विकल्प प्रदान करते हुए भारत को प्राकृतिक गैस की आपूर्तिकी सुवधिा प्रदान करेगी।

आगे की राह

- दोनों देशों को अभसिरण के उन कषेत्ः की ओर देखने की आवश्यकता है जहाँ दोनों देश एक-दूसरे के साझा हतितों की परस्पर समझ रखते हैं और इसकी प्राप्तिके लयि मलिकर कार्य कर सकते हैं।
- भारत और ईरान परस्पर सहयोग से बहुत कुछ हासलि कर सकते हैं। भारत द्वारा अपनाई जा रही मुखर कूटनीतिके ताज़ा और स्वागतयोग्य बदलाव है जहाँ अपने पड़ोसी एवं मतितर देशों के साथ खड़े रहने पर बल दयिा गया है और अपने राष्ट्रीय हतितों की पूर्तिके सर्वोपरि माना गया है।
 - यदि भारत ईरान के साथ अपने संबंधों की दशिा में इसी दृष्टिकोण का वसितार कर सके तो यह इन दो महान राष्ट्रों और सभ्यताओं के बीच सहयोग के लयि एक व्यापक संभावना का द्वार खोल सकता है। संबंध पुनरबहाली के लयि यही उपयुक्त समय भी है।

अभ्यास प्रश्नः भारत-ईरान संबंधों में कौन-सी चुनौतियिँ नहिाति हैं और इन्हें कैसे दूर कयिा जा सकता है? उदाहरण से अपने उत्तर की पुष्टिकीजयि।

